The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 6 | June 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

महिला सशक्तिकरण में आर्यसमाज आन्दोलन का योगदान

मोहित गंगवार (शोध छात्र)

डॉ विकास रंजन कुमार(सहायक आचार्य)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाजपुर उत्तराखण्ड , ई -मेल-mohitkurmi143@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15861676

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 29-06-2025

Published: 10-07-2025

Keywords:

समाज सुधारक, स्त्रियों की दशा, भारतीय समाज, आर्य समाज आंदोलन

ABSTRACT

आर्य समाज आंदोलन के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती जी 19वीं शताब्दी के महान समाज सुधारक थे स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने अपने चिंतन में महिला सशक्तिकरण को सबसे उच्च स्थान दिया है और इसके लिए पूर्ण प्रयास किया स्वामी दयानंद सरस्वती का उद्भव भारत की धरा पर ऐसे समय में हुआ जब भारतीय समाज में स्त्रियों की दशा बहुत दयनीय थी और उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता था स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने ऐसे समय में महिला उत्पीड़न के विरुद्ध भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों का खुलकर विरोध किया और उन्हें भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुषों के बराबर अधिकार दिए जाने की वकालत की स्वामी दयानंद सरस्वती जी के द्वारा स्थापित आर्य समाज आंदोलन ने स्त्री उत्थान को एक आवश्यक कार्य के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जो वर्तमान समय में भी महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य कर रहा है आज के समय में महिला सुरक्षा और उनके अधिकारों के संबंध में पहले से व्यापक सुधार हुए हैं किंतु आज भी भारत के अधिकांश क्षेत्रों में महिलाओं के साथ आसमान व्यवहार किया जाता है और उन्हें पुरुषों से कम आंका जाता है। आज यह बहुत जरूरी हो गया है कि हम हर क्षेत्र में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर अधिकार दें जिससे महिला और पुरुष के बीच का अंतर समाप्त हो सके समाज सुधार का प्रथम अंग

मानव है मानव दो अंगों से निर्मित हुआ है जिसमें स्त्री और पुरुष की संज्ञा प्रथम है। गाड़ी के दो पहियों की भांति कोई भी छोटा बड़ा न होकर समान होता है।

आर्य समाज और महिला शिक्षा:- स्वामी दयानंद सरस्वती जी सन्यासी थे जिस कारण वे संपूर्ण देश में भ्रमण करते रहते थे जिस कारण संपूर्ण देश की स्त्रियों की दशा की जानकारी उन्हें थी। वे जहां भी जाते उन्हें यह समझने में देर न लगती थी की स्त्रियों पर इस देश में क्या बीत रही है, सबसे पहला कारण स्त्रियों की स्थिति ठीक न होने का अशिक्षित होना उन्होंने देखा।

स्त्री अशिक्षा के कारण सामाजिक समानता के अधिकारों से वंचित थी। सर्वप्रथम स्त्री शिक्षा के लिए दयानंद सरस्वती के प्रयास लोक विख्यात हैं। स्वामी दयानंद जी ने स्त्री को माता के रूप में सारे राष्ट्र की जननी कहकर भाभी राष्ट्र निर्मात्री कहा। जिसे शिक्षित होने का सर्वप्रथम अधिकार है। नारी शिक्षा से ही समाज सुधार हो सकता है ऐसा विचार स्वामी दयानंद सरस्वती जी का था।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने स्त्रियों को वेद नहीं पढ़ने के मध्यकाल से चले आ रहे 'स्त्री शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुते:' जैसे वाक्य की कड़ी निंदा की और कहा यह सब पाखंडियों के बनाये कपोल कल्पित वाक्य हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने वेद के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा अध्ययन आदि वेद-विहित है। उनके लिए ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है।

स्वामी दयानंद नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने अपनी शिक्षा योजना में कन्याओं के लिए सभी प्रकार की विद्याओं का प्रशिक्षण देने का प्रावधान रखा था। अतिप्राचीन काल में नारी शिक्षा का सुप्रबंध था। उपनिषद कालीन सुशिक्षित ब्रह्मतत्व की गंभीर आलोचना करने वाली गार्गी जैसी ब्रह्मवादिनी स्त्री की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने उसे भारत की स्थिति में भूषण रूप कहा तथा उसके वैदुष्य की प्रशंसा की। ऋषि दयानंद के मत में नारी को मात्र गृहणी का दायित्व सौंपना उचित नहीं था अवसर आने पर वह जीवन के अन्य क्षेत्रों में अपनी कार्य क्षमता का प्रदर्शन कर सकती है। यथावश्यकता उसे राजकार्य (प्रशासन) तथा न्यायाधिपति पति का कार्य भी दिया जा सकता है।[1]

स्त्री शिक्षा पर जोर देना दयानंद की शिक्षा विषयक मान्यताओं की एक अलग विशिष्टता है। ऋषि दयानंद के अनुसार कन्याओं के पाठ्यक्रम में कुछ ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए जो उन्हें आदर्श गृहणी एवं आदर्श माता बनाने में भी सहायक सिद्ध हो। वे शिक्षा में किसी भी प्रकार के भेदभाव के विरुद्ध थे।[2] महिलाओं की शिक्षा हेतु उन्होंने अनेक कार्य किए। उनका विचार था कि "माता निर्माता

भवति" अर्थात माता ही संतान की निर्माता होती है। अतः उसका शिक्षित होना अत्यंत ही आवश्यक है। उन्होंने तथा उनके अनुयायियों ने महिला शिक्षा पर विशेष जोर दिया। देश के कोने-कोने में स्त्री शिक्षा हेतु पाठशालाएं, विद्यालय तथा महाविद्यालय की स्थापना की गई। देश के अनेक कन्या महाविद्यालय एवं गुरुकुल इसी लगन का परिणाम है।[3]

इसी प्रकार भारत के विभिन्न नगरों में डी०ए०वी० स्कूल तथा कॉलेज खोले गए। अमृतसर, जालंधर, अंबाला, चंडीगढ़, अबोहर, दिल्ली और शोलापुर में डी०ए०वी० कॉलेज खुले। जालंधर में दयानंद आयुर्वेदिक कॉलेज तथा अंबाला में सोहनलाल ट्रेनिंग कॉलेज आफ एजुकेशन शोलापुर में दयानंद कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स, अमृतसर में नारियों के लिए डी०ए०वी० कॉलेज तथा मेहरचंद टेक्निकल इंस्टिट्यूट खुले।[4]

आर्य समाज के बाल विवाह एवं विधवा विभाग के संबंध में विचार:- स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने बाल विवाह को वेदों के विरुद्ध बताया और कहा कि वेदों में बाल विवाह को मान्यता नहीं दी गई है। क्योंकि भारतीय समाज में अधिकांश विधवाएं बाल विवाह के ही कारण होती थी। इतनी छोटी आयु में वे विधवा होने का मतलब भी नहीं समझती थी और समाज द्वारा उन्हें सम्मान नहीं दिया जाता था तथा वे सार्वजनिक स्थानों पर नहीं जा सकती थी। स्वामी जी ने बाल विवाह को खत्म करने का बीड़ा उठाया और कहा की जहां तक बन सके वहां तक बाल्यावस्था में विवाह नहीं करने देवे।[5] स्वामी जी विधवा विवाह करने की अनुमति नहीं देते थे द्विजों में स्त्री और पुरुष का एक ही विवाह होना वेदादि शास्त्रों में लिखा है, द्वितीय बार नहीं।[6] परंतु वे बाल विधवा को उसके पति के भाई के साथ शादी करने की अनुमति देते थे क्योंकि इससे वे दोबारा अपने जीवन को जी सकती थी अन्यथा उनका जीवन नरक से बदतर हो जाता।

निष्कर्ष:- स्वामी दयानंद ने नारी जागरण के लिए जिस वैचारिक एवं सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया, ऋषि के उस मिशन को आगे बढ़ाते हुए आर्य समाज ने अनेक कन्या विद्यालयों एवं कन्या गुरुकुलों की स्थापना की। आज तो उसके सुंदर परिणाम हमारे सम्मुख है। शिक्षा के क्षेत्र में आज नारी पुरुषों से पीछे नहीं है बल्कि पिछले दशकों से तो ऐसा लगने लगा है कि नारी इस प्रतिस्पर्धा में पुरुष से आगे निकलने लगी है, परंतु खेद की बात यह है कि महर्षि दयानंद के मस्तिष्क में जिस शिक्षा का कार्यक्रम था वह लुप्त होता जा रहा है। अतः समाज का यह दायित्व है कि उचित शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए वह कटिबंध हो। धर्म के क्षेत्र में आज की नारी के विचार सुलझे हुए नहीं है। साक्षर होते हुए भी नारी धार्मिक आडंबरों की शिकार अधिक है। आवश्यकता है धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और तदनुरूप

आचरण करने की, ताकि घोर सांसारिकता के तनावपूर्ण क्षणों से मुक्ति पाई जा सके। स्वामी दयानंद द्वारा प्रदत्त नारी जागृति का यह अभियान तभी सार्थक होगा जबकि स्वयं नारी बालक की प्रथम शिक्षिका बनने से लेकर सामाजिक चेतना को उचित दिशा देने का गुरुत्व दायित्व बहन करे। नारी विषयक को समस्त समस्याओं के मूल में अशिक्षा अथवा उचित शिक्षा का अभाव भी मुख्य कारण रहा है अभी नारी की स्थिति में परिवर्तन का संघर्ष काल चल रहा है। और समय की परिवर्तनशील गति के साथ समस्याएं भी बदलती रही है। अब समय आ गया है कि समाज भी जागरूक संस्थाओं के विद्वान और चिंतक आज की नारी समस्याओं को पहचान कर तद् विषयक उचित समाधानों के सुझाव और प्रसार का प्रयत्न करें। स्वामी दयानंद के नारी संबंधी क्रांतिकारी कार्यक्रम आधुनिक प्रगतिशील संस्कृति में और अधिक प्रासंगिक सिद्ध हो रहे है। इसलिए हम निर्विवाद रूप से यह घोषणा कर सकते हैं कि वर्तमान युग की नारी उत्थान क्रांति के सर्वाधिक सक्रिय उन्नायक महर्षि दयानंद ही थे। परवर्ती सभी सुधारकों ने उन्हीं के कार्यक्रमों का अनुगमन किया है।[7]

नारी जाति के उत्थान के लिए स्वामी जी व आर्य समाज का योगदान अभूतपूर्व है। हिंदी के साहित्यकार स्वर्गीय प्रेमचंद ने अपनी पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी से वार्तालाप के प्रसंग में कहा ऋषि दयानंद ने नारी जाति के उत्थान हेतु जो महान प्रयत्न किए हैं, तदर्थ वे महिला वर्ग के बंध रहेंगे।[8]

रोमा रोलां ने तो स्वामी दयानंद जी के एतद् विषयक इति कर्तव्यों की समीक्षा करते हुए लिखा है कि "भारत की स्त्री जाति की पतितावस्था को सुधारने में भी दयानंद ने बड़ी उदारता और निर्भीकता का परिचय दिया। दयानंद ने उन बुराइयों के विरुद्ध महत्ती क्रांति की जिनसे स्त्रियां पीड़ित थी। उन्हें बताया कि स्वर्णिम युग में स्त्रियों को घर और समाज में पुरुषों के समान उच्च स्थान प्राप्त था। उन्होंने पुरुषों के सदृश्य शिक्षित करना चाहिए और गृहस्थ के प्रबंध तथा अर्थ पर उनका सर्वोपरि अधिकार रहना चाहिए। दयानंद ने विवाह में पुरुष और स्त्री के समान अधिकार का प्रतिपादन किया है।[9] स्वामी जी के अनुसार महिलाओं को पुरुषों के समान ही अधिकार प्रदान करने चाहिए। जिससे कि वे अपने को देश के विकास में योगदान देने योग्य बना सके। एक स्त्री का राष्ट्र निर्माण में बहुत बड़ा हाथ होता है क्योंकि वह स्त्री, एक मां, एक पत्नी, एक बहन होती है। जिसके द्वारा ही पुरुष के चरित्र का सर्वांगीण विकास किया जाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1-सरस्वती दयानंद, संस्कार विधि, एशियाटिक प्रेस बंबई, 1877, पृष्ठ संख्या- 56

2- भारतीय भवानीलाल, दयानंद दिग्विजयार्क, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली, 1974, पृष्ठ संख्या- 210

3- सरस्वती दयानंद, दयानंद ग्रंथमाला, वैदिक पुस्तकालय, अजमेर, 1983, पृष्ठ संख्या- 75

4- पाण्डेय धनपति, आर्य समाज और भारतीय राष्ट्रवाद (1875-1920), एस० चंद० एंड० कंपनी, रामनगर, दिल्ली, 1972, पृष्ठ संख्या- 107

5- सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 6, 2008, पृष्ठ संख्या-171

6- सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली 6, 2008, पृष्ठ संख्या-76

7- शर्मा, सतीश कुमार, महर्षि दयानंद की राष्ट्र को देन, डी०ए०वी० कॉलेज अमृतसर, 2010, पृष्ठ संख्या- 216

8- देवी शिवरानी, प्रेम चंद: घर में, नई किताब प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली, 2020, पृष्ठ संख्या-19

9- रोलैंड रोमेन, द लाइफ ऑफ रामकृष्ण, अद्वैत आश्रम मायावती, अल्मोड़ा, 1931, पृष्ठ संख्या- 79